प्रातःक्लास 26/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशांतिः शिवभगवानुवाचः अभी शिवभगवान निराकार को तो सभी मानते हैं। एक ही निराकार शिव है जिसकी सभी पूजा करते हैं। बाकी जो भी देहधारी हैं उन सभी की साकार है। पहले–2 निराकार आत्मा थी। फिर साकार बनी है। साकार बनते हैं, शरीर में प्रवेश करते हैं तब उनका पार्ट चलता है। मूलवतन में तो कोई भी पार्ट है नहीं। जैसे एक्टर्स घर में हैं तो नाटक का पार्ट नहीं है। स्टेज पर आने से पार्ट बजाते हैं। आत्माएं भी यहां आकर पार्ट बजाती हैं। पार्ट पर ही सारा मदार रहता है। आत्मा में तो कोई फ़र्क है नहीं। जैसे तुम बच्चों की आत्मा है वैसे इनकी आत्मा भी है। बाप परमपिता परमात्मा क्या करते हैं, उनका ऑक्युपेशन क्या है वह जानना है। कोई राष्ट्रपति है, राजा है, यह आत्मा का ऑक्युपेशन है ना। यह पवित्र देवताएं है; इसलिए उन्हों को पूजा जाता है। अभी तुम बच्चे समझते हो यह पढ़ाई पढ़कर यह ल.ना. विश्व के महराजा–महारानी बने हैं। किसने बनाया? परम आत्मा ने और कोई बड़ी बात नहीं। तुम आत्माएं भी पढ़ते हो। बड़ाई यह है जो बाप आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं और राजयोग भी सिखलाते हैं। कितना सहज है। उनको कहा जाता है राजयोग। बाप को याद करने से हम सतोप्रधान बन जाते हैं। बाप तो है ही सतोप्रधान। उनकी कितनी महिमा गाते रहते हैं। भक्ति मार्ग में कितना फूल, दूध आदि पढ़ाते थे, समझ कुछ भी नहीं थी। देवताओं कपामे पूजते थे समझ कुछ भी नहीं। उन्होंने क्या किया जो फूल, दूध आदि चढ़ाते हैं? उसने क्या कर्तव्य किया है जो इतना पूजते हो? देवताओं का तो फिर भी मालूम है। वह है स्वर्ग़ के मालिक। उन्हों को किसने बनाया यह भी पता नहीं है। पूजा भी करते हैं शिव की; परंतु यह ख़्याल में नहीं कि यह भगवान है। भगवान ने उन्हों को ऐसा बनाया है फूल चढ़ाते, दूध चढ़ाते हैं कितनी भक्ति करते हैं, है सभी अनजान। तुमसे भी बहुतों ने शिव की पूजा की होगी। अभी तुम समझते हो आगे कुछ नहीं जानते थे। उनका ऑक्युपेशन क्या है, क्या सुख देते हैं कुछ भी पता नहीं है। क्या यह देवताएं सुख देते हैं? भल राजा–रानी प्रजा को सुख देते हैं; परंतु उन्हों को तो शिवबाबा ने ऐसा बनाया ना। बलिहारी उनकी है। यह तो सिर्फ़ राजाई करते हैं। प्रजा भी बन जाते हैं। बाकी यह कोई का कल्याण नहीं करते हैं। अगर करते भी हैं तो अल्पकाल के लिए। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको कहा जाता है कल्याणकारी। बाप अपना परिचय बैठ देते हैं। मेरी तुम पूजा करते थे ना लिंग की। उनको परम आत्मा कहते थे। परम आत्मा सो परमात्मा हो जाता; परंतु यह नहीं जानते कि यह क्या करते हैं। बस सिर्फ़ कह देंगे कि वह सर्वव्यापी है। नाम–रूप से न्यारा है। नाम–रूप से न्यारा है फिर उस पर दूध आदि चढ़ाना शोभता नहीं है। आकार है तब तो उस पर चढ़ाते हैं ना। उनको निराकार तो कह नहीं सकते। तुमसे मनुष्य आरग्यु बहुत करते हैं। बाबा के पास भी आकर आरग्यु ही करेंगे। फलतू माथा खपावेंगे। फायदा कुछ भी नहीं। यह समझाना तो तुम बच्चों का काम है। तुम्हारा बैठ माथा खपावें। हमारा तो न खपावें ना। बाबा के ध्यान में तो यह सभी रीढ़ बकरियां हैं। उन्हों की एक्टिविटी ही ऐसी है। कुछ नहीं जानते। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा ने हमको रीढ़ बकरियां से कितना ऊँच बनाया है। यह पढ़ाई है ना। बाप टीचर बन पढ़ाते हैं। तुम मनुष्य से देवता बनने लिए पढ़ रहे हो। देवी–देवताएं सतयुग में ही होते हैं। कलियुग में तो होते ही नहीं। रामराज्य ही नहीं जो पवित्र रह सके। देवी–देवताएं जो थे वे फिर वाम मार्ग में चले जाते हैं। है तो वह भी तुम्हारे जैसे मनुष्य। बाकी जैसे चित्र दिखाई है ऐसे है नहीं। जगतनाथ के मंदिर में तुम देखेंगे काले चित्र हैं। बाप कहते हैं माया जीते जगत जीत बनो तो उन्होंने फिर जगतनाथ नाम रख दिया है। ऊपर में सभी गंदे चित्र दिखाये हैं। देवताएं वाम मार्ग में गये तो काले बन पड़े। उनकी भी पूजा करते रहते हैं। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है कि कब हम पूज्य थे। 84 जन्मों का हिसाब किसकी भी बुद्धि नहीं है। पहले पूज्य सतोप्रधान, फिर 84 जन्म लेते–2 तमोप्रधान पुजारी बन पड़े हैं। सतोप्रधान है पूज्य। तमोप्रधान है पुजारी। वाम मार्ग में जाने से काले बन जाते हैं। रघुनाथ मन्दिर में भी काले चित्र दिखाते हैं। अर्थ तो उनका

कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। ज्ञान–चिक्षा पर बैठ गोरे बनते हो। काम–चिक्षा पर बैठ काले बन जाते हो। देवताएं वाम–मार्ग में जाकर विकारी बन पड़ते। फिर उनका नाम तो देवता रख नहीं सकते। वाम–मार्ग में जाने से काले बन पड़े हैं। यह निशानी दिखाई है। कृष्ण काला राम भी काला। शिव को भी काला बना देते हैं। सभी काले, शिव का लिंग भी काला बना देते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो शिवबाबा तो बा(का)ला बनता ही नहीं है। वह तो हीरा है जो तुमको भी हीरा जैसा बनाते हैं। वह तो कब काला बनता नहीं। उनको फिर काला क्यों बना दिया है? कोई काला होगा उसने बैठ काला बना दिया है। शिवबाबा कहते हैं हमने क्या दोष किया है जो मुझे भी काला बना दिया है। मैं तो आता ही हूँ सभी को गोरा बनाने। मैं तो सदैव ही गोरा हूँ। फिर काला क्यों? मनुष्य की ऐसी पत्थर बुद्धि बन पड़ी है जो कुछ भी समझ नहीं। शिवबाबा तो है हसीन। सभी को हसीन बनाने आते हैं। मैं तो एवर गोरा मुसाफिर हूँ। मैंने क्या किया जो मुझे काला बनाया है। अभी तुमको भी गोरा बनना है। ऊँच पद कैसे पाना है वह तो बाप ने समझाया है फॉलो फादर। सभी कुछ बाप के हवाले कर दिया। वह कब भूख थोड़े ही मर सकते हैं। फादर को देखो कैसे सभी कुछ दे दिया। भल साधारण थे। न बहुत ग़रीब न बहुत साहूकार। बाबा अभी भी कहते हैं तुम्हारा खान–पान बीच का साधारण होना चाहिए। न बहुत ऊँच न बहुत नीच। बाप ही सभी शिक्षा देते हैं ना। यह भी देखने में तो साधारण ही आते हैं। तुमको कहते हैं कहां है भगवान, दिखाओ? अरे, आत्मा बिंदी है, उनको देखेंगे क्या। यह तो जानते हो आत्मा का सा. इन आँखों से होता ही नहीं। तुम कहते हो हमको भगवान पढ़ाते हैं। तो ज़रूर कोई शरीरधारी होगा ना। निराकार कैसे पढ़ावेंगे। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। जैसे तुम आत्मा हो। शरीर द्वारा पार्ट बजाते हो। आत्मा ही बोलती है शरीर द्वारा। तो आत्मा वाच; परंतु आत्मावाच अक्षर शोभता नहीं है। आत्मा तो है वानप्रस्थ। वाणी से परे। वाच तो शरीर से ही करेंगे ना। वाणी से परे आत्मा सिर्फ़ आत्मा रह जाती। वाणी में आना है तो शरीर तो चाहिए ना। बाप भी ज्ञान का सागर है तो ज़रूर किसका शरीर पकड़ेगा ना। उसको रथ कहा जाता है। नहीं तो वह सुनावे कैसे। यह रथ भी कैसे बना यह तुम समझ सकते हो। बाप पतित से पावन बनाने की बैठ शिक्षा देते हैं। प्रेरणा की बात ही नहीं। यह तो ज्ञान बी(की) बातें हैं। वह आवे कैसे। किसके शरीश में आवे। कोई को भी पता नहीं है सिवाय तुम्हारे । रचयिता ही बैठ खुद रचना का परिचय देते हैं। मैं कैसे और किस रथ मे आता हूँ। बच्चे जानते नहीं बाप का रथ कौन सा है। बहुत ही मुँझे हुये हैं। किस–किस का रथ बना देते हैं। जनावर आदि में तो आ न सके। आवेंगे तो मनुष्य में ही। बाप कहते हैं मैं किस मनुष्य में आऊँ। यह तो समझ नहीं सकते हैं। आना भी भारत में ही होता है। भारतवासियों में भी किसके तन में आऊँ। क्या प्रज़ीडेंट वा साधु महात्मा के रथ में आऊँगा। ऐसे भी नहीं है कि पवित्र रथ में आना है। यह तो है ही रावण राज्य। गायन भी है दूर देख(श) का रहने वाला आया देश पराया। यह भी बच्चों को पता है भारत अविनाशी खण्ड है। उनका कब विनाश होता नहीं। अविनाशी है। बाप अविनाशी भारत खण्ड में आते हैं किस तन में आते हैं वह खुद ही बतलाते हैं और तो कोई जान न सके। मनुष्य तो ढेर हैं। तुम जानते हो कोई साधु महात्मा में भी आ न सके। वह है ही हठयोगी, निवृत्ति मार्ग वाले। बाकी रहे भारतवासी भक्त। अभी भक्तों में भी किस भक्त में आवे। भक्त भी बड़ा चाहिए जिसने बहुत भक्ति की हो। भक्ति का फल देने वाले भगवान को आना पड़ता है। भारत में भक्त तो ढरे हैं। कहेंगे यह बड़ा भक्त है। इसमें आना चाहिए। ऐसे तो बहुत ही भक्त बन पड़ते हैं। कल को वैराग्य आ जाये भक्त बन जाये। वह तो इस जन्म का भक्त होगा ना। उसमें तो आवेंगे नहीं। बाप समझाते हैं इस जन्म के जो भी भक्त हैं उनमें नहीं आता हूँ। मैं उसमें आता हूँ जिसने पहले–2 भक्ति शुरू की है। उन्हों को भी भक्ति का फल मिलना है। तुम भी समझते हो सबसे बड़ा भक्त कौन है। जिसने पहले–2 भक्ति शुरू की है। द्वापर से लेकर भक्ति शुरू हुई है। यह हिसाब–किताब तो कोई समझ न सके। कितनी गुप्त बातें हैं। मैं आता उनमें हूँ जो पहले–2

भक्ति शुरू करते हैं। नम्बरवन जो पूज्य था वही फिर नम्बरवन पुजारी भी बनेगा। खुद कहते हैं यह रथ ही पहले नम्बर में जाते हैं। फिर 84 जन्म भी यही लेते हैं। मैं इनके ही बहुत जन्मों के अंत के भी अंत में प्रवेश करता हूँ। उनको ही फिर नम्बरवन राजा बनना है। यही बहुत भक्ति करते हैं। भक्ति का फल भी इनको मिलना चाहिए। बाप दिखलाते हैं बच्चों को कि देखो यह मेरे ऊपर वारी कैसे गया। सभी कुछ दे दिया। इतने सभी बच्चों को सिखलाने लिए तो फिर धन भी चाहिए ना। करांची में तुम बच्चियां कितनी ढेर भागी। साथ में तो कुछ भी लेकर नहीं आई। तुमको क्या हुआ। दिन में कोई प्रोग्राम बनाया नहीं। बैठे–2 रात को क्या हो गया जो निकल पड़ी। यह तो कहां भागा नहीं। यह सेफ्टी में था। तो क्या कोई भूख मरते हैं क्या। उनके साथ जो भी आये वे भूख मरते हैं? कुछ भी नहीं। ईश्वरीय प्रसाद मिलता रहता है। ईश्वर का यज्ञ रचा हुआ है। खुद आकर इसमें बैठ रुद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं। इसको पढ़ाई भी कहा जाता है। रुद्र शिवबाबा जो ज्ञान का सागर है उसने ही यह यज्ञ रचा है ज्ञान देने लिए। अक्षर बिल्कुल ठीक है। राजस्व स्वराज्य के लिए यज्ञ....स्वराज्य पाने लिए यज्ञ। इनको यज्ञ क्यों कहते हैं? यज्ञ में तो वह लोग आहुति आदि बहुत कुछ डालते हैं किचड़पट्टी। तुमतो पढ़ते हो आहुति क्यों डालते हो। तुम जानते हो हम पढ़कर होशियार हो जावेंगे फिर सारी दुनियां इसमें स्वाहा हो जावेगी। यज्ञ में पिछाड़ी के टाइम जो भी सामग्री होती है सभी डाल देते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको बाप पढ़ा रहे हैं। बाप है तो बहुत ही साधारण। मनुष्य क्या जाने। उन बड़े–2 आदमियों की तो बहुत ही महिमा होती है। बाप कितना साधारण बैठा है। मनुष्य को कैसे पता लगे। यह तो दादा जवाहरी था। शक्ति तो कोई देखने में नहीं आती। सिर्फ़ इतना ही कह देते हैं इनमें कुछ शक्ति है। बस। यह नहीं समझते हैं कि इनमें सर्वशक्तिवान बाप है। इनमें शक्ति है; परन्तु वह भी आई कहां से? बाप ने प्रवेश किया ना। जो उनका खज़ाना है वह ऐसे थोड़े ही दे देते हैं। तुम योगबल से लेते हो। वह तो सर्वशक्तिवान है ही। उनकी शक्ति कहां चली नहीं जाती है। परमात्मा को सर्वशक्तिवान क्यों गाया जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। कृष्ण को स्वदर्शनचक्र दे दिया है जिससे कृष्ण सभी को गला काटते रहते। सिक्ख लोग भी स्वदर्शनचक्र का कॉपी किया है। लड़ते हैं तो चक्र से गला काट देते हैं। स्वदर्शनचक्र हथियार रूप में समझ लिया है। बाप कहते हैं काम कटारी। तो वह कटारी हथियार समझ लेते हैं। यह सभी हिसंक निशानियां रख दी हैं। बाप आकर सभी बातें समझाते हैं। पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ इनमें तो पूरी कट चढ़ी हुई है। इनमें ही मैं प्रवेश करता हूँ। पराया देश, पराये शरीर में इनके ही बहुत जन्मों के अंत में आता हूँ। कट जो चढ़ी हुई है वह तो कोई उतार न सके सिवाय एक सतगुरू के। कट उतारने वाला एक ही है। वह एपस्युलिटली पवित्र है। यह भी तुम समझते हो। यह भी बुद्धि में बिठाने लिए टाइम चाहिए। तुम बच्चों को बाप सभी कुछ समझा देते हैं। बाप भी विल कर देते हैं बाप ज्ञान सागर है, शान्ति का सागर है। सारा विल कर देते हैं बच्चों को। सभी कुछ समझाते हैं। इन पर पूरी कट चढ़ी हुई है। आते भी पुरानी दुनियां में हैं। सभी पतित हैं। सबसे जास्ती पतित कौन है। यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ। जो हीरे जैसा था वह कौड़ी जैसा बना है। वह भल इस समय करोड़पति है; परंतु अल्पकाल के लिए। सभी का खलास हो जावेगा। वर्थ पाउण्ड तो तुम बनते हो। अभी तुम भी स्टूडेंट हो। यह भी स्टूडेंट है। यह भी बहुत जन्मों के अंत में है। कट चढ़ी हुई है। जो बहुत अच्छा पढ़ते हैं उनमें ही बहुत कट चढ़ती है। वही फिर सबसे पतित बनते हैं। उनको फिर पावन बनना है। यह ड्रामा बना हुआ है। यह कहते हैं मैं जो सबसे पावन बनता हूँ फिर 84 जन्मों बाद सबसे पतित भी बनता हूँ। बाप तो रियल बात बताते हैं ना। बाप है सत्य। वह कब उल्टी नहीं बतलाते। यह सभी बातें मनुष्य को समझ न सके। तुम बच्चों को बिगर मनुष्यों को कैसे पता पड़े। कहते हैं इनको ब्रह्मा कैसे कहते हैं, परमात्मा ने इनमें प्रवेश क्यों किया। यह अभी तुम समझते हो।

ब्राह्मण कुल है सबसे ऊँचा; क्योंकि बाप पढ़ाते हैं। ब्राह्मण से देवता बनाते हैं। बाप के बच्चे हो गये ना। रूहानी बाप के बच्चे। जिनको बाप बच्चे–2 कह बैठ पढ़ाते हैं। श्रीमत पर चलते रहते हैं। शिवबाबा इसमें बैठ बनवाते रहते हैं। करन–करावनहार है ना। जो भी करते हैं और कराते भी हैं। कुछ खुद करते हैं कुछ कराते भी हैं। प्रैक्टिकल में अभी तुम समझ रहे हो। दूसरी तो कोई चीज़ है नहीं। शरीर तो पुराना ही लेना है; क्योंकि वनवासी है। तुम भी वनवासी हो। वानप्रस्थ में जाने वाले हो। वानप्रस्थ कहो वा वनवासी कहो बात एक ही है। वाणी से परे जाकर वास करना है। शादी में वनवा में बैठते हैं ना। जाना तो चाहिए स्वर्ग़ में; परंतु वह तो और ही नर्क में जाते हैं। भल बड़े घर के होते हैं उनको भी पुराने कपड़े आदि पहनाकर वनवास में बिठाते हैं। जंगल में जाने वाले को भी वनवासी कहते हैं। तो बाप क्लीयर कर समझाते हैं वह कहां जाते हैं, तुम कहां जाते हो। समझाते देखो कैसे हैं। यह ही समझने की मुश्किलात है। आत्मा बोल रही है। आत्मा किसमें बोलेगी। जनावर आदि में तो बोल न सके। ज़रूर मनुष्य चाहिए। बाप खुद ही कहते हैं मैं तो एपस्युलिटली क्लीयर हूँ। मेरे में कोई खाद नहीं है। मैं सदेव पवित्र ही हूँ तब तो मुझे बुलाते हो। मैं सारे विश्व का सोनार हैं(हूँ)। सभी धातु मिक्स हो गये हैं। अभी मैं आत्मा को गला बिल्कुल पवित्र बना देता हूँ। धोबी भी हूँ। अभी तुम आत्मा को भी समझ गये हो। आत्मा ही सभी ग्रहण करती है। सतयुग से लेकर कलियुग तक आत्मा ही पार्ट बजाती है। 84 जन्मों का पार्ट है। आत्मा पवित्र है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। यह सभी बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। समझने लिए तो टाइम चाहिए ना। प्रदर्शनी में कोई थोड़ा समय आवेंगे, क्या समझेंगे? इसमें तो फुर्सत चाहिए आकर समझें मनुष्य से देवता विश्व का मालिक कैसे बन सकते हैं। बाप कहते हैं, हे आत्माएं तुम ..... पवित्र नही हो। तब तो पवित्र बनने लिए बुलाते हो। अभी फिर पावन बनना है। बाप ही बच्चे–2 कह समझाते रहते हैं। तुम तो बच्चे–2 नहीं कहेंगे ना। तुम आपस में भाई–2 हो। बाप बच्चे–2 कह बात करेंगे तो बाबा का झट तीर लगेगा। बाप बच्चों को कहेंगे लज्जा नहीं आती। तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। योग अक्षर कहते हो तो बाबा समझते हैं कच्चे हैं बहुत। योग अक्षर सन्यासियों आदि का सुना हुआ है। वह तो हठयोगी योग आदि लगाते हैं। यहां तो बाप को याद करना है। फलाना टीचर हमको पढ़ाते हैं। याद रहता है ना। ऐसे कहेंगे क्या हमारा टीचर साथ योग है। भारत में योग के लिए मनुष्य कितना माथा मारते हैं। तुमसे भी पूछते हैं कुछ आइडिया बताओ अथवा युक्ति बताओ। ब्रह्मा कुमारियों से डरते हैं। तुम मौत सिखलाते हो। जानते हो हम बाबा के पास मरना सीखने जाते हैं। आत्माओं को अपने शरीर छोड़कर घर जाना है। बाप आते ही हैं मौत देने लिए। सन्यासियों लोग तो ऐसी शिक्षा दे न सके। मौत किसको पसंद आवे बड़ा मुश्किल है। तुम कोशिश करते हो अभी जल्दी–2 जावें; परंतु जा नहीं सकते हो सिवाय कर्मातीत अवस्था के। बुद्धि में कर्मातीत अवस्था को पाकर हम घर जावें। 84 जन्म भटके हैं। अभी जल्दी जावें। सिर पर बोझा बहुत है। जितना याद करेंगे उतना ही कट उतरेगी। ज्ञान में आने बाद पाप किया तो उसका फिर सौणा दण्ड हो जाता है। बाप की निंदक ठौर न पाये। ऐसे–2 पाप भी करते हैं। मुख्य बात तो है विकार का(की)। औरों को भी विकार में ढकेलते हैं। तो पाप बहुत ही चढ़ जाता है। तुम कहते हो हमको पढ़ाई से यह बनना है। तो कह देते हैं यह तुम्हारी कल्पना है। अरे, प्राइम मिनिस्टर, प्रज़ीडेन्ट आदि बनते हैं क्या कल्पना है? सृष्टि का भी चक्र फिरता है यह कल्पना है? यूनिवर्सिटी में पढ़ते हैं क्या यह कल्पना है? अक्षर ऐसे बोलते हैं जो खुद भी समझ न सके। कल्पना का अर्थ क्या। जो बुद्धि में आया वह बना दिया। तो ऐसे–2 भी आते हैं उनसे हमको क्या बात करनी है। बाप गसा(गुस्सा) तो नहीं कर सकते ना। कोई गसा(गुस्सा) करते हैं तो बाप की निंदा कराते हैं। इनको भी डर रहता है जैस कर्म मैं करूँगा..... तुमको भी समझना है। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।